www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
मंगलवार 8 अक्टूबर 2019

दैनिक जागरण
बुराई को अच्छाई के समक्ष परास्त होना ही पड़ता है

विकास और पर्यावरण

मुंबई में मेट्रो के कारशेड निर्माण के लिए पेड़ों को काटने का विरोध आखिरकार सुप्रीम कोर्ट भी पहुंचा। उसने मुंबई की आरे कॉलोनी में पेड़ काटने पर रोक लगाने का आदेश देने के साथ ही मामले को पर्यावरण पीठ के समक्ष भेज दिया। इस पीठ का फैसला जो भी हो, इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि जितने पड़े काटने जरूरी थे उतने काटे जा चुके हैं। बंबई हाईकोर्ट के फैसले के बाद यह काम आनन-फानन शायद इसीलिए हुआ, क्योंकि मुंबई मेट्रो कॉरपोरेशन यह जान रहा था कि हाईकोर्ट के फैसले को चुनौती दी जाएगी। जो भी हो, यह पहली बार नहीं जब पर्यावरण प्रेमियों एवं सामाजिक संगठनों ने पेड़ों को काटने का विरोध किया हो और अपनी लड़ाई अदालत तक ले गए हों। कई बार तो सड़क या फिर रेल मार्ग के निर्माण के लिए पांच-दस वृक्षों को भी काटने का विरोध किया गया है। इस विरोध के चलते विकास योजनाओं का काम रुका भी है।

आज जब जलवायु परिवर्तन का खतरा बढ़ता जा रहा है और जल-जंगल-जमीन को संरक्षित करने की जरूरत कहीं अधिक बढ़ गई है तब यह सुनिश्चित किया ही जाना चाहिए कि शहरी इलाकों में वृक्षों को काटने की नौबत न आए, लेकिन इसी के साथ यह भी ध्यान रखना चाहिए कि विकास जमीन पर ही होगा और जब ऐसा होगा तो कहीं न कहीं पेड़ काटने ही पड़ेंगे। वास्तव में पर्यावरण और विकास के बीच संतुलन कायम करने की जरूरत है और इस जरूरत की पूर्ति तभी होगी जब बीच का रास्ता तलाशा जाएगा। पहले तो यह देखा जाए कि कम से कम पेड़ काटने पड़ें, फिर यह सुनिश्चित किया जाए कि जितने पड़े काटे जाएं उससे कहीं अधिक न केवल लगाएं जाएं, बल्कि उनकी देखभाल भी की जाए। अगर यह जिद पकड़ी जाएगी कि चार पेड़ भी न कटने पाएं, भले ही विकास के काम न हों तो इससे बात नहीं बनेगी। यह ठीक नहीं कि विकास की कई योजनाएं पर्यावरण संबंधी सवालों से दो-चार होने के कारण अटकी पड़ी हुई हैं। इनमें से कुछ की तो लागत भी बढ़ गई है। यह ठीक नहीं। निश्चित रूप से विकास की चिंता करते समय पर्यावरण की भी चिंता करनी होगी, लेकिन केवल तभी नहीं जब किसी योजना-परियोजना की राह में कुछ वृक्ष आ रहे हों। क्या यह अजीब नहीं कि पर्यावरण की तमाम चिंताओं के बीच पंजाब और हरियाणा में पराली एक बार फिर जलाई जा रही है? क्या यह पर्यावरण को जानबूझकर जहरीला बनाने वाला काम नहीं? बेहतर हो कि पर्यावरण के साथ विकास की भी समान चिंता की जाए और जंगल बचाने-बढ़ाने पर कहीं ज्यादा ध्यान दिया जाए।

किसानों की चिंता

झारखंड के उन किसानों को भी मुख्यमंत्री कृषि आशीर्वाद योजना का लाभ मिलेगा, जो अबतक इससे वंचित थे। इसके दायरे में विशेषकर खूटकट्टी प्रकृति की जमीन के रैयत आएंगे, जिनका रिकॉर्ड राज्य के अंचल कार्यालयों में लगभग नहीं है। ऐसे में इन किसानों की पहचान पारंपरिक स्वशासन व्यवस्था के वाहक मानकी-मुंडा, प्रधान आदि के माध्यम से सुनिश्चित होगी। सरकार के इन प्रयासों से जहां राज्य के हजारों किसान अन्य किसानों की ही तरह सूचीबद्ध हो जाएंगे, वहीं उन्हें विभिन्न योजनाओं का लाभ भी मिल सकेगा। सरकार के इन प्रयासों की सराहना की जानी चाहिए, क्योंकि खूटकट्टी रैयतों की बसावट आज भी सुदूर क्षेत्रों में है। वहां सरकारी सुविधाओं की पहुंच अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा कम है। झारखंड में आदिवासियों के पूर्वजों ने आजीविका के लिए जंगलों के बड़े हिस्से को काटकर उसे खेती के लायक बनाया था। ऐसे में जिसने उसकी जोत-कोड़ की, वही उसका मालिक बन बैठा। ऐसी भूमि के मालिक खूटकट्टीदार कहलाते थे। इसके प्रबंधन से लेकर लगान तक की व्यवस्था गांव के ही प्रधान आदि के हाथों में थी।

> जमीन से जुड़े कई कानून बने, परंतु खूटकट्टीदारी व्यवस्था पूर्ववत जारी रही। ऐसी भूमि का कभी सर्वे तक नहीं हुआ

और तो और, झारखंड में नागवंशियों के प्रवेश तक यह प्रथा नियमबद्ध हो चुकी थी। बाद में संबंधित भूमि के आसपास गांव बसते चले गए। इस बीच समय के साथ-साथ जमीन से जुड़े कई कानून बने और उनमें संशोधन भी हुआ, परंतु खूटकट्टीदारी व्यवस्था पूर्ववत जारी रही। ऐसी भूमि का कभी सर्वे तक नहीं हुआ। लिहाजा राज्य के नक्शे से इस प्रकृति की भूमि और इसके रैयत गायब रहे। बहरहाल सरकार ने उनकी चिंता की है। अब अन्य किसानों की ही तरह पांच एकड़ तक भूमि रखने वाले खूटकट्टीदार रैयतों को भी प्रति एकड़ पांच हजार रुपये की दर से राशि मुहैया कराई जाएगी। राज्य में आज भी कृषि बहुत हद तक मौसम के मिजाज पर निर्भर करती है। ऐसी स्थिति में सरकारी सुविधाएं उनके लिए वरदान साबित होगी। सामान्य परिस्थितियों में भी वे इस राशि का उपयोग उन्नत बीज और खाद की खरीदारी के साथ-साथ कृषि क्षेत्र की अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति में कर सकेंगे।

चक्रव्यूह में फंसी बैंकिंग व्यवस्था

डॉ. भरत झुनझुनवाला

> मूल कंपनी की विश्वसनीयता पर भरोसा करके बैंक उनकी सब्सिडियरियों को कर्ज देते जाते हैं। इसकी परिणति अक्सर फंसे कर्ज के रूप में सामने आती है

पंजाब एंड महाराष्ट्र बैंक यानी पीएमसी बैंक घोटाले में यह सामने आया कि उसने घाटे में चल रही कंपनियों को कर्ज दिए और उन्हें फर्जी नाम से छुपा लिया। इसी तरह महाराष्ट्र स्टेट कोऑपरेटिव बैंक ने घाटे में चल रही सहकारी चीनी मिलों को संदिग्ध कर्ज दिए। इन मिलों से शरद पवार का गहरा जुड़ाव रहा है। बैंक के निदेशक उनके भतीजे अजीत पवार थे। इसीलिए माना जा रहा है कि अजीत के दखल से ही ये कर्ज दिए गए। आखिरकार ये कर्ज खटाई में पड़ गए। ऐसी गड़बड़ियां बैंक अधिकारियों की जानकारी से होती हैं और रिजर्व बैंक चाहे तो उन पर नियंत्रण लगा सकता है। दूसरी गड़बड़ियां वे हैं जो उद्यमियों द्वारा बैंकों को गुमराह कर अंजाम दी जाती हैं। जैसे आइएलएंडएफएस द्वारा देश के तमाम बैंकों को बड़ी चतुराई से पर्दे के पीछे सहायक कंपनियां बनाकर गुमराह किया गया। इन सहायक कंपनियों को सब्सिडियरी कहा जाता है। सब्सिडियरी के शत प्रतिशत शेयर मूल या प्रवर्तक कंपनी के हाथ में होते हैं। इन सहायक कंपनियों की स्थिति किसी व्यक्ति के स्वामित्व वाली फर्म के समान होती है। इन तिकड़मी उद्यमियों की मूल कंपनी पाक साफ रहती है। वह बैंकों से कम कर्ज लेती है, लेकिन सहायक कंपनियों द्वारा बैंकों से बड़े पैमाने पर कर्ज लेकर उसकी बंदरबांट की जाती है। सब्सिडियरी को होने वाला घाटा छिपा रहता है। मूल कंपनी लाभ में दिखाई जाती है जबकि असल में पूरे समूह की तस्वीर बदरंग होती है।

मैंने आइएलएंडएफएस के समकक्ष एक बड़ी कंपनी का अध्ययन किया। इस कंपनी द्वारा स्वयं बैंकों से बहुत कम कर्ज लिया गया। उसके कर्ज का यह आंकड़ा महज 2,400 करोड़ रुपये है, पर उसकी सब्सिडियरी कंपनियों पर कर्ज का अंबार लगा है। यह बिल्कुल वैसे है जैसे किसी संयुक्त परिवार के मुखिया ने अपने पुत्र के नाम से दुकान बनाई। पिता ने स्वयं बैंक से कर्ज नहीं लिए, लेकिन पुत्र के नाम से भारी कर्ज उठा लिए। इसी प्रकार इस कंपनी के मुखिया ने अपनी मूल कंपनी के लिए तो उतने कर्ज नहीं लिए, लेकिन सब्सिडियरी कंपनियों के नाम पर 71,600 करोड़ रुपये का भारी-भरकम कर्ज ले लिया। बैंकों से ली गई रकम को ये सब्सिडियरी कंपनियां अपनी मूल कंपनी को ठेकों के माध्यम से स्थानांतरित कर देती हैं। जैसे पुत्र ने बैंक से कर्ज लिए और उस रकम को अपने पिता को ठेके के माध्यम से हस्तांतरित कर दिया। कर्ज तो पुत्र के नाम रह गया, जबकि पिता को भारी लाभ हुआ। इसी तर्ज पर इस कंपनी की सब्सिडियरी द्वारा बैंकों से 3,493 करोड़ रुपये का कर्ज लिया गया और इसमें 3,067 करोड़ रुपये अपनी मूल कंपनी को स्थानांतरित कर दिए। यहां कर्ज तो सब्सिडियरी के खाते में रह गया, पर मूल कंपनी की परिसंपत्तियां बढ़ गईं। ऐसी ही एक सब्सिडियरी कंपनी उत्तराखंड में जल विद्युत परियोजना विकसित कर रही है। उसने परियोजना निर्माण के सभी अनुबंध अपनी मूल कंपनी को दिए हुए हैं। सब्सिडियरी द्वारा महीने में कुल 18 हजार यूनिट बिजली खपत की जा रही है जबकि मूल कंपनी इससे 80 गुना यानी 14 लाख यूनिट बिजली उपभोग कर रही है।

अवधेश राजपूत

स्पष्ट है कि मूल कंपनी ही मुख्य रूप से इस परियोजना को विकसित कर रही है और नाम सब्सिडियरी का है। यह कुछ वैसी बात हुई जैसे पिता ने स्वयं दुकान लगाई, लेकिन कागजों में दुकान बेटे के नाम कर दी। सब्सिडियरी के माध्यम से परियोजना को विकसित करने का उदेश्य यह है कि उसमें हो रहे घाटे को छुपाया जा सके। जैसे दुकान में घाटा हुआ तो भी पिता दिखा सकता है कि घाटा उसे नहीं, बल्कि बेटे को हुआ है। इस जल विद्युत परियोजना की वास्तविक लागत 535 करोड़ रुपये है, लेकिन वर्तमान में यह लागत 2,000 करोड़ तक पहुंच गई है। परियोजना घाटे में आ गई है। ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ रकम नंबर 2 में निकाल ली गई है, लेकिन इस घाटे को सब्सिडियरी के खाते में छिपा दिया गया। जैसे संयुक्त परिवार द्वारा धंधा चलाया जा रहा है और उसमें घाटा हो रहा है, परंतु इस घाटे पर पर्दा डाला जा रहा है। कुछ ऐसी ही हालत उक्त कंपनी की दूसरी सब्सिडियरी की दिखती है। यह स्थिति कंपनी और सब्सिडियरियों के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट हो जाती है। मूल कंपनी का वार्षिक लाभ 9,200 करोड़ रुपये है जबकि सभी सब्सिडियरियों का कुल लाभ केवल 5,400 करोड़ रुपये है, लेकिन मूल कंपनी द्वारा मात्र 2,400 करोड़ रुपये का कर्ज लिया गया है, जबकि सभी सब्सिडियरियों द्वारा कुल 71,600 करोड़ रुपये का भीमकाय कर्ज लिया गया। मूल कंपनी के लाभ अधिक और कर्ज शून्यप्राय हैं, जबकि सब्सिडियरियों के लाभ न्यून और उन पर कर्ज का अंबार लगा हुआ है। वहीं शेयर बाजार को यही दिखता है कि इस विशाल कंपनी ने केवल 2,400 करोड़ रुपये का कर्ज लेकर 9,200 करोड़ रुपये का लाभ कमाया है।

सब्सिडियरियों की कमजोर हालत किसी को दिखती नहीं है, लेकिन एक दिन इस साठगांठ का भंडाफोड़ हो ही जाता है। ऐसा ही आइएलएंडएफएस प्रकरण में हुआ, जहां पर्दे के पीछे का यह खेल ज्यादा दिनों तक छिप नहीं पाया। अंततः इन्हीं घाटों के बोझ तले कंपनी डूब गई। आइएलएंडएफएस की तरह ऐसी तमाम मूल कंपनियों का यह खेल समाप्त होगा और उस समय देश के वे तमाम बैंक एक बड़े संकट में आ जाएंगे जिन्होंने सब्सिडियरियों को भारी मात्रा में कर्ज दे रखे हैं। बैंकों की गलती यह होती है कि वे सब्सिडियरियों को कर्ज देते समय उनकी स्वयं की पूंजी का मूल्यांकन नहीं करते। मूल कंपनी को हो रहे आकर्षक लाभ और उसकी पुरानी विश्वसनीयता पर भरोसा करके बैंक सब्सिडियरियों को लगातार कर्ज देते जाते हैं। यही प्रक्रिया बैंकों ने आइएलएंडएफएस के साथ अपनाई थी। यदि बेटे की दुकान पर निरंतर कर्ज चढ़ता जाए और बैंक उसके पिता की विश्वसनीयता के आधार पर कर्ज देते जाएं तो कहानी ज्यादा दिन नहीं चल सकती। देश में ऐसी तमाम कंपनियां हैं जिन पर केंद्र सरकार को ध्यान देना चाहिए जिससे आइएलएंडएफएस जैसा संकट दोबारा दस्तक न दे।

सरकार को चाहिए कि उन कंपनियों को चिन्हित करे जो खुद तो मुनाफा कमा रही हैं, लेकिन उनकी सब्सिडियरी भारी घाटे में हैं। ऐसी कंपनियों की तत्काल गहन जांच करनी चाहिए। देश की बैंकिंग व्यवस्था को ऐसी बड़ी कंपनियों के चक्रव्यूह से निकालने की जरूरत है। पंजाब महाराष्ट्र कोऑपरेटिव बैंक एवं महाराष्ट्र स्टेट कोऑपरेटिव बैंक द्वारा बैंक अधिकारियों की मिलीभगत से घाटे में चल रही कंपनियों को कर्ज दिए जाने पर भी नियंत्रण करना होगा, परंतु यह नियंत्रण तुलना में आसान है। अनियमित कर्ज देने की गड़बड़ी दिख जाती है, जबकि सब्सिडियरियों का चक्रव्यूह आसानी से नहीं दिखता। इसे सुलझाना होगा।

(लेखक वरिष्ठ अर्थशास्त्री एवं आइआइएम बेंगलूर के पूर्व प्रोफेसर हैं)

response@jagran.com

विजयादशमी का विजय-पाठ

परिचय दास

> राम-रावण का समर इसलिए जारी है, क्योंकि हमारे भीतर के प्रकाश और अंधकार का संघर्ष कभी खत्म नहीं होता

विजयादशमी शक्ति का उत्सव है। मंगल का हेतु है। सवाल किया जा सकता है कि कैसी शक्ति? जवाब यही होगा कि जो अन्याय का प्रतिरोध करे, जो निर्बल को संबल दे और जो करुणा को समन्वित कर पुरुषार्थ को आधार बनाए उसकी शक्ति। दरअसल हर किसी के जीवन में एक समय वनवास आता है। उसमें स्वयं को बचाए रखकर जब कोई साहसपूर्वक भविष्य की ओर अग्रसर रहता है वही विजयादशमी है। विजयादशमी से पूर्व नौ दिवसीय उपवास की शक्ति का प्रयोजन होता है। उपवास यानी निकट रहना। यह निकटता वास्तव में अपने से होनी चाहिए। जो अपने से निकट नहीं, वह किसी के निकट नहीं हो सकता। अपने से निकट होकर किसी और के निकट होना श्रेयस्कर है। समकालीन दुनिया में आदमी अपने को खोता जा रहा है। सब कुछ पाने के बावजूद स्वयं को भूलता जा रहा है। यह खुद के प्रति प्रतिकूलता है। पद, प्रतिष्ठा, रुतबा, संपर्क आदि तब तक द्वितीयक हैं जब तक स्वयं यानी निजता की आभा न हो। निजता की शक्ति से हीन व्यक्ति शक्तिशाली नहीं हो सकता, विजयादशमी यही इंगित करती है। राम आत्मिक शांति, गंभीरता के चरम क्षणों के विरल संगीत हैं। सीता और राम सिर्फ हमारी परंपरा की गति नहीं, यति भी हैं, छंद भी हैं जो सदियों से हमारी अभिव्यक्ति बने हुए हैं।

हर किसी में अच्छाई-बुराई होती है। इनका अनुपात अलग-अलग हो सकता है। भारत के सामान्य व्यक्ति की प्रश्नाकुलता के स्वर विजयादशमी में हैं जो हमारी धमनी और शिराओं में वास करते हैं। हमारी संकल्प-भावना के मूर्तिमंत रूप विजयादशमी में हैं। जब अन्याय हो तो उससे संघर्ष करने का भाव विजयादशमी में मिलता है। सामान्य को इकट्ठा करके संघर्ष करने की कला राम के पास है। सत्ता से दूर रहकर भी मैत्री-कला कोई उनसे सीखे। मैत्री का निर्वाह करना भी वह भलीभांति जानते हैं। वह लंका पर राज नहीं करते। विस्तारवादी नीति के नियामक नहीं हैं। उनके विपरीत रावण एक ऐसा प्रतिनायक है, जो विद्वान है और प्रकृति को वश में रखता है। रावण से सीखने के लिए लक्ष्मण रावण की मृत्यु की घड़ी में सादर उसके पास जाते हैं। रावण विराट शक्ति और प्रतिभा का धनी था। उसकी शक्ति और प्रतिभा यदि स्त्री के आहरण में न खपती और मन विस्तार लिए होता तो शायद राम-रावण संघर्ष की दिशा कुछ और होती। खैर राम-रावण का एक अपराजेय समर आज भी जारी है। हमारे भीतर के प्रकाश और अंधकार का संघर्ष कभी खत्म ही नहीं होता। जैसे अंधकार में भी विशिष्ट क्षमताएं होती हैं वैसे ही रावण में भी बेहतरी कई बार देख सकते हैं। भारतीय मन किसी में केवल नकारात्मकता ही नहीं देखता, वह सकारात्मकता भी खोजता है या कहें कि खोज लेता है। शंबूक और सीता-निष्कासन के प्रसंग को भी लोक-समाज अपने नजरिये से देखता है।

महत्व यदि सत्ता, संपत्ति, कृत्रिम लोकप्रियता, धाक आदि के सहारे प्राप्त हुआ तो उसके कम हो जाने की संभावना अत्यधिक होती है। इसके उलट यदि अच्छाई मूल गुण-संपत्ति से बनी एवं बुनी हुई हो तो उसमें धुंधलापन आने की अधिक आशंका नहीं होती। राम का जो अर्जित गुण है, उसे मौलिक सृजनशीलता कह सकते हैं। आधुनिकतावाद ने औद्योगिक विकास, बुद्धिवाद एवं विज्ञान के वर्चस्व को प्रगति एवं सभ्यता के साथ जोड़ दिया था, जबकि उत्तर आधुनिकतावाद ने संस्कृति को एक के बजाय अनेक और केंद्रित के बजाय विकेंद्रित करार दिया। अभी देखें तो नए सिरे से अब संस्कृति विमर्श का मुद्दा बन रही है, जिसमें जड़ों की तलाश, अतीत एवं परंपरा के नए अवगाहन महत्वपूर्ण बनते जा रहे हैं। राम को भी नए सिरे से आविष्कृत करने के लिए उनको गहराई से समझना होगा जो 'अन्य' के रूप में रहे हैं और कई बार साहित्य एवं इतिहास से बाहर के माने जाते रहे हैं, जैसे-दस्यु, राक्षस एवं आदिजन। उनके साथ ही सीता, उर्मिला, मांडवी आदि को भी नए सिरे से देखना होगा। इतनी सारी अर्थ छवियों, दृष्टियों की संकुलता एवं बहुवचनात्मकता से सुसज्जित कथा हजारों साल से लोक-व्यवहार, आचार, स्मृति में रंगमयी झिलमिलाहट से भारतीय समाज को रचती रही है। इसके अंदर ऐसी निरंतरता है जो जीवन का उत्सव बन जाए।

भारतीय संस्कृति में हमेशा से एक मध्यम या संतुलित सोच की मान्यता रही है। यहां अतिवाद को स्थान नहीं है। इसीलिए प्रतिपदा से दशमी तक के लिए ऐसी ऋतु चयनित है, जहां न शीत है न ग्रीष्म। जहां आंतरिक और बाहरी स्वच्छता पर बल है। यह रामकथा एक नहीं, सैकड़ों रूपों में है। रामायण में केवल एक पाठ नहीं, बल्कि सैकड़ों पाठ हैं। एक पाठ राम का तो अन्य पाठ सीता का। एक पाठ लक्ष्मण का तो अन्य पाठ उर्मिला का। राम, लक्ष्मण, भरत के अंतरसंबंध भी एक भिन्न कोटि का पाठ बनाते हैं।

रामायण, रामचरितमानस, अध्यात्म रामायण, साकेत, रामचंद्रिका, आनंद रामायण, बौद्ध रामायण आदि अनेक रामायण हैं। इन सभी में अलग-अलग दृष्टियां हैं। दृष्टियों की बहुलता वाली ऐसी विजयादशमी का विजय-पाठ अंततः यदि सामान्य व्यक्ति की प्रेरक स्मृति की सुगंध से नहीं जुड़ा होता तो वह अर्थमय नहीं होता और हमारे भीतर-बाहर के चौक-चौबारे में मेला न बन जाता। एक ऐसा मेला, जहां हम स्वयं से मिलते हैं और लोक से भी। नायक से मिलते हैं और प्रतिनायक से भी। समय से मिलते हैं और भविष्य से भी। काव्य से मिलते हैं और महाकाव्य से भी। अंत से मिलते हैं और अनंत से भी। भाषा से मिलते हैं और भाषा से परे भी। हद से मिलते हैं और बेहद से भी।

(लेखक साहित्यकार हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

अवसर

सभी जीवों में सिर्फ मनुष्य के पास यह विकल्प है कि वह चाहे तो देवता बन जाए या दैत्य। जब कोई सकारात्मक और अच्छे काम करना शुरू कर देता है तो उसे ही लोग देवता स्वरूप मानने लगते हैं, जबकि नकारात्मक तथा बुरे काम करने पर उसकी तुलना राक्षस से होने लगती है। सकारात्मक काम करने पर मनुष्य का आत्मबल बढ़ता है और वह हर वक्त निर्भय रहता है, जबकि बुरे काम में उसका आत्मबल क्षीण होता है, हर वक्त डरा-डरा सा रहता है तथा आंख मिलाकर बात करने की उसकी हिम्मत प्रायः लोगों से नहीं हो पाती है तथा वह अपनी ऊर्जा खो बैठता है।

त्रेतायुग में मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम का जब जन्म हुआ तो माता कौशल्या ने उनके देवता स्वरूप को पहचान लिया। चतुर्भुजी श्रीराम का दर्शन कर वह प्रसन्न हुईं और उनसे मनुष्य बनकर देवता स्वरूप काम करने के लिए कहा। उनकी इच्छाओं को देखकर श्रीराम पुनः बाल स्वरूप में आ गए, ताकि अपनी कुशलता बढ़ाकर देवता बनने की प्रेरणा मिल सके। दूसरी तरफ रावण महाविद्वान तथा भगवान शंकर का आशीर्वाद पाकर भी नकारात्मक काम के चलते राक्षस बन गया तथा आतंकवाद को जन्म देने लगा, जिसके चलते उसकी विद्वता क्षीण होने लगी। जब वह माता सीता का अपहरण करने चला तो डरा हुआ था। उसका आत्मबल लुप्त हो गया था, जबकि वही रावण चलता था तो पृथ्वी कांपने लगती थी। साफ है कि कोई कितना भी ताकतवर हो जब गलत काम करता है तो छुपकर करता है।

दूसरी तरफ अपनी विनम्रता, सौम्यता, पीड़ितों की मदद करते हुए श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए। शक्तिशाली, सर्वसाधन सुलभ एवं भौतिकता से समृद्ध रावण को अशक्त कोल, भील तथा सामान्यजन के बल पर पराजित करने में सफल हुए। इस प्रसंग से स्पष्ट होता है कि मनुष्य के रूप में जन्म लेने के बाद कोई भी चाहे तो वह राम की तरह पूजनीय बने या रावण की तरह दुर्गति को प्राप्त हो, यह स्वयं उस व्यक्ति के हाथों में होता है।

सलिल पांडेय

बाजार की गिरफ्त में त्योहार!

अंशुमाली रस्तोगी

> बाजार के बढ़ते प्रभाव ने दशहरा, दीपावली जैसे त्योहारों की प्रासंगिकता को काफी नुकसान पहुंचाया है

त्योहारों का मौसम चल रहा है। इसमें बाजार भी तैयार है। सेल लगी हुई है। जमकर डिस्काउंट दिया जा रहा है। टीवी और अखबारों में आने वाला हर विज्ञापन कह रहा है कि खरीदो, खरीदो। मौका हाथ से न जाने दो। इस दफा चूके तो उम्र भर पछताओगे। बाजार चाहता है कि हम त्योहार को छोड़ खरीदारी और सेल के बीच ही उलझे रहें। बाजार और त्योहार को मोबाइल आपस में जोड़े हुए है। टचस्क्रीन पर लगातार दौड़ती अंगुलियां मानो कुछ भी छोड़ना नहीं चाहतीं। मोबाइल पर ही सारी ऑनलाइन खरीदारी हो रही है। इसी पर एक-दूसरे को त्योहार की बधाइयां भी दी जा रही हैं। न कहीं बाहर आना है, न जाना। घर बैठे जो चाहो खरीदो। किसी को भी विश करो।

ऑनलाइन बाजार बहुत कम समय में बहुत तेजी से हमारी जरूरत बन गया है। त्योहार की परिभाषा-भाषा ही बदलकर रख दी है इसने। आजकल के बच्चे त्योहार का मतलब सिर्फ खरीदारी ही समझते हैं। त्योहारों का हमारे जीवन में क्या अर्थ, क्या महत्व है उन्हें नहीं पता। दोष उनका भी कहां है? खुद हमने कहां उन्हें यह सब बताने का कभी प्रयास किया। जैसे हम दिनभर मोबाइल और ऑनलाइन बाजार में उलझे रहते हैं, बच्चे भी यही सीख रहे हैं। एक समय ऐसा भी था, जब त्योहारों की परंपरा का ध्यान रखा जाता था। उन्हें उत्सव की तरह मनाया जाता था। तब बाजार का भी हम पर ऐसा प्रभाव नहीं था। मां-बाप जो खरीदकर दे देते थे, खुशी-खुशी पहन लेते थे। तब बाजार और कपड़ों से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण त्योहार हुआ करते थे।

हां, यह सच है कि ऑनलाइन बाजार ने बाजार और खरीदारी को हमारे लिए बेहद आसान कर दिया है। अब कुछ भी खरीदने के लिए सड़कों या दुकानों पर भटकना नहीं पड़ता। एक क्लिक में हर चीज घर बैठे आपके सामने होती है। ऑनलाइन बाजार के बढ़ते प्रभाव ने दशहरा, दीपावली जैसे त्योहारों की प्रासंगिकता को बहुत हद तक नुकसान पहुंचाया है। अपनों के बीच होकर भी हम उनके बीच नहीं होते। हमने अपना सारा सोशल सर्कल समाज के बीच से हटाकर सोशल मीडिया पर शिफ्ट कर दिया है। सारी सामाजिकताएं वहीं निभाई जा रही हैं। सारे सुख-दुख उसी पर बांटे जा रहे हैं।

आलम यह है कि त्योहार आ रहे हैं ऐसा कुछ हमें अहसास ही नहीं होता। हम दूसरों से ही नहीं, खुद अपने आप से कटते जा रहे हैं। इतना सीमित कर लिया है हमने अपनी जिंदगी को कि जहां उत्सव और त्योहार भी अब ज्यादा मायने नहीं रखते। हर त्योहार का मूल स्वभाव आपस में जोड़ना, उमंग-उत्सव बनाए रखना, व्यस्तताओं से निजात पाना होता है, लेकिन हमने तो खुद को बाजार के हवाले कर दिया है। बाजार आकर्षण दे सकता, किंतु सुकून नहीं दे सकता। रिश्तों में गर्माहट, सरलता, अपनापन नहीं डाल सकता। त्योहार का महत्व नहीं बता सकता। दिलों में उमंग का संचार नहीं कर सकता। बावजूद इसके हमारे बीच ऑनलाइन बाजार की चकाचौंध निरंतर बढ़ती ही जा रही है। यह कहां जाकर रुकेगी या कभी रुकेगी भी, कोई नहीं जानता।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

खुद से करें शुरुआत

गांधीवादी मूल्यों को अपनाने का समय शीर्षक से लिखे अपने लेख में जगमोहन सिंह राजपूत ने महात्मा गांधी के विचारों का वर्णन किया है। साथ ही यह सलाह दी है कि यदि दुनिया आज उनके बताए रास्ते पर चलने लगे तो विश्व की समस्त समस्याएं खत्म हो जाएंगी। गांधी जी मानते थे कि सभी पंथों का एक ही मकसद है-इंसानियत और अहिंसा। वह स्पष्ट कहते थे कि न किसी धर्म विशेष से नफरत करो, न ही किसी जाति या गरीबी से, अगर नफरत करनी है तो उनके गलत कामों और विचारों से करो। न कोई हिंदू बुरा होता है और न ही कोई मुसलमान बुरा होता है, बुरा तो वह होता है जो इंसानियत के खिलाफ काम करता है। महात्मा गांधी सभी पंथों का सम्मान करते थे, तभी तो कहते थे कि 'ईश्वर अल्लाह तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान।' उन्होंने हर धर्म, जाति को आपस में जोड़ने का काम किया था। आज जिस तरह दुनिया हिंसा, नफरत, शत्रुता, स्वार्थ जैसी व्याधियों के दलदल में धंसती जा रही है, वह जरा भी उचित नहीं है। दुनिया से इन बुराइयों को जड़ से उखाड़ने के लिए गांधीवादी मूल्यों को अपनाने का समय आ चुका है, लेकिन अफसोस तो इस बात का है कि जब बापू के देश के लोग ही उनके मूल्यों को अपनाने या उनके बताए मार्ग पर चलने को तैयार नहीं तो हम यह कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि दुनिया गांधीवादी मूल्यों को अपनाएगी? जाहिर है हमें इसकी शुरुआत खुद से करनी होगी। सबसे पहले हमें उनके विचारों को अपनाकर विश्व के सामने उदाहरण पेश करना चाहिए।

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

मेलबाक्स

खोजें बीच का रास्ता

बॉम्बे हाईकोर्ट द्वारा मेट्रो कार शेड के लिए पेड़ काटने की अनुमति दिए जाने के बाद लोग सड़कों पर उतर आए हैं और इस फैसले के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं। इस मुद्दे ने एक नई बहस को जन्म दे दिया है कि आखिर विकास और पर्यावरण में किसे चुनें? सवाल गंभीर है। नगरीकरण और बदलते दौर में मेट्रो को भी नकारा नहीं जा सकता, लेकिन बीच के रास्ते की तलाश क्यों नहीं हो रही है। एक तरफ जब जलवायु परिवर्तन को लेकर जनता और सरकारें आमने-सामने हैं तब यह मुद्दा और भी लोगों का ध्यान खींचता है। लेकिन महज चंद लोग सोशल मीडिया पर अपनी प्रतिक्रिया दर्ज कराकर अपनी जिम्मेदारी पूरी मान लेते हैं। यह भूल जाते हैं कि हम अपनी और आने वाली पीढ़ियों के लिए खुद गड्ढे खोद रहे हैं। हमें जिंदा रहने के लिए पर्यावरण पर बहस करनी ही होगी। अब इस पूरे घटनाक्रम में एक बात सबसे जरूरी और दिलचस्प यह है कि आज भी विकास की दौड़ में समाज के बीच में कुछ लोग हैं जो पेड़ों की कटाई के खिलाफ प्रदर्शन कर जेल जा रहे हैं। उन्हें पर्यावरण की चिंता है। इससे यही उम्मीद बनती है कि हम इस दुनिया को बचाने की जद्दोजहद करें तो बचा सकते हैं। बस एक समाज के तौर पर हमें जागरूक होना पड़ेगा। पेड़ तभी काटे जाएं, जब बहुत जरूरी हो, क्योंकि एक पेड़ को तैयार होने में बहुत वक्त लगता है। इसकी भरपाई बदले में पेड़ लगाने से नहीं की जा सकती है। हमें नए पेड़ भी लगाने होंगे और पुराने को बचाना भी होगा।

संजय दूबे, भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली

पर्यावरण के साथ धोखा

आज जब पूरा विश्व पर्यावरण को बचाने के लिए आगे आ रहा है तो भारत में इसके उलट देखने को मिल रहा है। मुंबई में आरे का जंगल को नष्ट करने का काम तेजी से बखूबी चल रहा है। विकास की अंधी दौड़ में हम कहीं खो से गए हैं, वहीं पर्यावरण के साथ अपने को अपंग करते जा रहे हैं। एक तरफ सरकार बोलती है पेड़ लगाओ और दूसरी तरफ खुद पेड़ों को काटने का काम कर रही है। यह कैसा विकास किया जा रहा है? यह तो सरासर पर्यावरण के साथ धोखा है।

आशीष, राम लाल आनंद कॉलेज, दिल्ली विवि

वृक्षों का काटा जाना अनुचित

इसे दुर्भाग्यपूर्ण संयोग ही कहा जाएगा कि 4 अक्टूबर को कौन बनेगा करोड़पति में राजस्थान के जोधपुर के गांव खेजड़ली में 300 वर्ष पूर्व वृक्षों को काटने से बचाने के लिए अमृता देवी ने अपनी तीन बेटियों के साथ जान तक दे दी थी, इनके ऊपर प्रश्न पूछा गया था। इसी दिन मुंबई के आरे के जंगलों में रातों-रात हजारों पेड़ काट दिए गए।

hemahariupadhyay@gmail.com

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।